Cambridge International A Level

Cambridge Assessment International Education
Cambridge International Advanced Level

HINDI **9687/02**

Paper 2 Reading and Writing **October/November 2019**

INSERT

1 hour 45 minutes

8593528425-I

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

This Insert contains the reading passages for use with the Question Paper.

You may annotate this Insert and use the blank spaces for planning.

The Insert is **not** assessed by the Examiner.

सर्वप्रथम ये निर्देश पढ़ें

इस अंतर्पत्र में वे पठनीय गद्यांश हैं जिनका प्रश्नपत्र के लिए प्रयोग होना है।

आप इस अंतर्पत्र पर लिख सकते हैं और योजना के लिए खाली स्थान का उपयोग कर सकते हैं।

परीक्षक इस अंतर्पत्र का मूल्यांकन **नहीं** करेगा।

This document consists of **3** printed pages and **1** blank page.

NL 169416/2
© UCLES 2019

Cambridge Assessment International Education

https://xtremepape.rs/

भाग 1

गद्यांश 1 को पढ़ें और **प्रश्न 1, 2** और **3** के उत्तर प्रश्नपत्र पर लिखें।

गद्यांश 1

बूंद-बूंद नहीं बरतेंगे, तो बूंद-बूंद को तरसेंगे

पानी की ज़रूरत में लगातार हो रही वृद्धि, भूमिगत जल के अंधाधुंध दोहन से भूजल के स्तर में जिस तेज़ी से कमी आ रही है, उसे देखते हुए लगता है कि वर्ष 2100 में पानी के लिये लोग तरस जायेंगे। साफ़ पानी की कमी के कारण हैजा, डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियों के साथ कुपोषण के मामलों में बढ़ोत्तरी की आशंका को नकारा नहीं जा सकता। तात्पर्य यह कि दुनिया की दो अरब आबादी को आज मजबूरी में दूषित पानी पीना पड़ रहा है। इनमें से 63 करोड़ लोग भारत और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में रहते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में दो अरब लोग दूषित और मलयुक्त स्रोत से निकले हुए पेयजल का उपयोग करते हैं।

खेती पर निर्भर लोगों को बढ़ते तापमान के बीच खाद्यान्न पैदा करने में और मवेशियों का चारा जुटाने में आज की अपेक्षा अधिक मुश्किलों का सामना करना होगा। जिस तेज़ी से तेल, प्राकृतिक गैस और कोयले की खपत पर निर्भरता बढ़ती जा रही है, उसे देखते हुए लगता है यह उत्पाद उतनी मात्रा में उपलब्ध नहीं होंगे जितनी उनकी आवश्यकता होगी। इनके पर्याप्त रह पाने की आशा न के बराबर है। इस बात के प्रमाण हैं कि वर्ष 2040 तक तेल के उपयोग में पाँच से दस प्रतिशत तक की कमी आयेगी। अक्षय उर्जा यानी पवन और सौर उर्जा के उपयोग में जिस तेज़ी से वृद्धि हो रही है, उसे देखते हुए इसमें लगातार बढ़ोत्तरी होगी।

भारत शहरी क्रांति के कगार पर है। यहाँ नये-नये शहर और कस्बे तेज़ी से बढ़ रहे हैं। परिणामस्वरूप खेती योग्य ज़मीन तेज़ी से कम होती जा रही है। जंगल ख़त्म होने के कारण पक्षियों और वन्यजीवों के आवास स्थल भी उसी तेज़ी से लुप्त होते जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार इस क्षेत्र के शहरों और कस्बों की आबादी 2031 तक 60 करोड़ का आंकड़ा पार कर जायेगी।

वर्ष 2050 तक समय से पहले होने वाली मौतों का एक अहम कारण वायु प्रदूषण होगा। पर्यावरण में दिनोंदिन हो रही गिरावट के कारण 80 अरब डॉलर प्रतिवर्ष की दर से सकल घरेलू उत्पाद घटा है। सदी के अंत तक वृद्धों की तादाद दुनिया भर में 23 प्रतिशत के करीब होगी। जीवन प्रत्याशा वर्ष 2100 में 68 साल से बढ़कर 81 साल हो जायेगी। इन हालातों में सम्पूर्ण जनसंख्या के बेहतर जीवन की आशा कैसे की जा सकती है। विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई के दिन जनसंख्या नियंत्रण के केवल संकल्प ही को लेने से कुछ नहीं होने वाला, उसे जीवन में कार्यन्वित करना होगा। तभी कुछ बेहतर भविष्य की उम्मीद की जा सकती है अन्यथा नहीं।

https://xtremepape.rs/

भाग 2

गद्यांश 2 को पढ़ें और **प्रश्न 4** और **5** के उत्तर प्रश्नपत्र पर लिखें।

गद्यांश 2

बारिश के दिनों की संख्या घटी

बुंदेलखंड में अकाल और सूखे के घाव गहरे होते जा रहे हैं। जीने की संभावनाएं क्रमशः कम होती जा रही हैं। पिछले 10 सालों में बारिश के दिनों की संख्या घट कर क्रमशः 52 से 23 पर आ गई है। चारों तरफ पहाड़ी श्रृंखलायें, ताल-तलैये, बारहमासी नालों और नदियों से घिरा इलाका अतीत में भले ही गौरवशाली रहा हो लेकिन इसका वर्तमान स्थिति की एक ऐसी कहानी लिख रहा है, जिससे किसी बेहतर भविष्य की आशा नहीं की जा सकती। इसलिए भी नहीं क्योंकि ताज़ा संकट के हल सीमित रहे हैं।

दुर्भाग्य से यह अंचल विकास के नाम पर सूखा इलाका बना दिया गया है। यहाँ की ज़मीन खाद्यान्न, फलों, और तम्बाकू की खेती के लिए बहुत उपयोगी मानी गई है। पिछले 10 वर्षों में बुंदेलखंड में खाद्यान्न उत्पादन में 55 फीसदी और उत्पादकता में 21 प्रतिशत की कमी आई है। प्राकृतिक संसाधनों के बाजारू दोहन के कारण पारंपरिक खेती भी नष्ट हो गई है। लेकिन अभी भी किसान हित के सुधार का कोई प्रस्ताव दिखाई नहीं देता है।

बुंदेलखंड की औसत बारिश 95 सेंटीमीटर है, जिससे यहाँ पानी की कमी बनी रहती है। ऐसे में कम बारिश में पनपने वाली फसलों को प्रोत्साहन देने की ज़रुरत थी। इस इलाके में दालों के उत्पादन को बढ़ावा नहीं दिया गया, जो कि शायद बुंदेलखंड के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता था। धान की तुलना में इसमें केवल एक तिहाई पानी ही लगता है। लेकिन मुनाफे की ललक में बड़े किसानों ने सोयाबीन और कपास जैसे विकल्पों को चुना।

यहाँ की ज़मीन उपजाऊपन खो रही हैं, जिसे उपजाऊ बनाए रखने की ज़रूरत है, पर ऐसा ना करके भूमि को खनिज खदानों और सीमेंट के कारखानों के लिए बाँटा जा रहा है। सीमेंट के कारखाने केवल अपनी ज़मीन का ही उपयोग नहीं करते हैं बल्कि आस-पास की सैकड़ों एकड़ ज़मीन को भी बर्बाद कर देते हैं। खेतों में कारखानों के प्रदूषण ने एक बड़ी आबादी को बीमारी की चपेट में ले रखा है।

ज़मीन की नमी गयी तो गहरे नलकूप खोद कर ज़मीन का पानी खींच कर निकालने की शुरुवात हुई और भू-जल स्रोतों को सुखाना शुरू कर दिया गया। जल विभाग की रिपोर्ट बताती है कि बुंदेलखंड क्षेत्र के जिलों के कुओं में पानी का स्तर नीचे जा रहा है। दूसरी ओर हर साल बारिश में गिरने वाले 70 हजार मिलियन क्यूबिक मीटर पानी में से 15 हजार मिलियन क्यूबिक मीटर पानी ही ज़मीन में उतर पाता है। अब ऐसे में यदि 1000 मिलीमीटर बारिश हो भी जाए तो क्या पानी थोड़ा भी ज़मीन में उतर पायेगा? क्या ऐसे में भू-जल स्तर बढ़ पायेगा?

© UCLES 2019

https://xtremepape.rs/

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.

https://xtremepape.rs/